जयशंकर प्रसाद

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

संपादक

प्रो. विश्वंभर 'अरुण'

प्रबंध संपादक

अतहर नबी

उ.प्र. हिन्दी-उर्दू साहित्य कमेटी, लखनऊ

जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

संपादक

प्रो. विश्वंभर 'अरुण'

प्रबंध संपादक

अतहर नबी

प्रकाशक

उ.प्र. हिन्दी-उर्दू साहित्य (अवार्ड) कमेटी

जे.एन. सान्याल रोड, लखनऊ

मुद्रक

अलंकार प्रिन्टर्स, दिल्ली-92

प्रसाद-काव्य में भारतीयता का जयघोष

❑ डॉ० रवीन्द्रनाथ मिश्र

'भारत' शब्द 'भरत' से संबंध रखने वाला या भरत की संतान भारत वर्ष, हिंदुस्तान अर्थ से संबंधित है। यह शब्द 'वेद' और वेदकालीन पूर्वजों से प्राप्त हुआ है, जो कि अपने प्राकृतिक परिवेश, सामाजिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, राष्ट्रीय चेतना और उसमें अन्तर्निहित रागात्मक भावना से परिपुष्ट है। महादेवी वर्मा का मानना है– 'भारत राष्ट्र में भारतभूमि उसके निवासी और उनकी संस्कृति तो अंतर्निहित है ही, उक्त संज्ञा से वे विश्व की राष्ट्र समष्टि में अपनी स्थिति का बोध भी करते हैं और दूसरों को अपना परिचय भी देते हैं।' आज भूमण्डलीकरण, बाजारवाद, सम्प्रदायवाद, आतंकवाद, पर्यावरण प्रदूषण और मीडिया के विस्फोट से भारतीयता की वास्तविक छवि धूमिल हुई है, जबकि मनुष्यता मानवीय मूल्यों और गुणों पर ही आधारित होती है अन्यथा उसे पशुरूपेण कहा गया है। जो लोग आधुनिकता के नाम पर पाश्चात्य जीवन-मूल्यों एवं संस्कृति-सभ्यता के घोर पक्षधर रहे उनमें से अनेक के मन में अपनी अस्मिता, अपनी पहचान के लोप होने की आशंका उत्पन्न होने लगी है। प्रवासी भारतीयों का भारत के प्रति अनुराग बढ़ने लगा है।

स्वतंत्र भारत में आधुनिकता के नाम पर जो विकास हुआ, वह असंतोषजनक, अपर्याप्त और एकांगी प्रतीत होने लगा है। भारत की स्थिति पाश्चात्य देशों से भिन्न रही है। भारतीय चेतना का मूल स्वर आध्यात्मिक रहा है। हम 'असतो मा सद्गमय' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उपासक रहे हैं। भारतीय भाषाओं के साहित्य में भारतीयता को विविध रूपों में चित्रित किया गया है। भक्ति-साहित्य सामाजिक चेतना का एक महत आंदोलन था।

हमारे 'ऋग्वेद' राष्ट्र की एकता का एक पुष्ट आधार प्रस्तुत करते हैं–

'गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेस्मिन सन्निधि कुरुः ॥'

बंगला में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय और तमिल में सुब्रह्मण्यम भारती का स्वर भारतीयता की वास्तविक पहचान कराता है। हिंदी में भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग एवं छायावाद युग में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता के स्वर सबसे ऊपर और प्रधान रहे हैं। छायावादी कवियों में ऐतिहासिक-सांस्कृतिक-राष्ट्रीय चेतना प्रसाद में सबसे अधिक है। वस्तुतः छायावाद पर बंगला साहित्य का प्रभाव व्यापक रूप से पड़ा। आज भी भारतीयता की खुशबू सम्पूर्ण भारत में टैगोर के 'जन-मग-मन' और बंकिचन्द्र चट्टोपाध्याय के 'वन्देमातरम्' गीतों से फैल रही है। टैगोर की 'गीतांजलि' में 'दिव्य स्वातंत्र्य' कविता में भी राष्ट्रीयता के स्वरों ने भारतीयों की हृदतंत्री को झंकृत किया है।

इसके अतिरिक्त 'सार्थक जनम है मेरा,' 'जनमा इसी देश में', 'इस बार तुम मेरी

गंगा बनकर आए', 'बंगाल की माटी' आदि कविताएं भारतीयता की भावना से ओत-प्रोत हैं। इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद के विचारों में भी भारतीयता की सही पहचान मिलती है, जिन्होंने कि आध्यात्मिक चेतना को एक नया कलेवर प्रदान किया। कालान्तर में ईश-वंदना मातृभूमि की वंदना में परिणत हो गई।

जयशंकर प्रसाद की कविता में भारतीयता की परख उनके विविध काव्य-संग्रहों से गुजरते हुए की जा सकती है। 'चित्राधार' का 'वन-मिलन' खण्ड शकुन्तला और दुष्यंत की कथा पर आधारित है। जिनके पुत्र के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा। प्रस्तुत खण्ड में 'कण्व' की मंगलकामना इस प्रकार है–

'कण्व दियो आसीस जाहु सब सुख सों रहियो।
जीवन के सब लाभ प्रेम परिपूरित लहियो॥
चिर बिछुरे सब मिले हिये आनन्द बढ़ावन।
मालिनि-तरल-तरंग लगी मंगल को गावन॥'

'अयोध्या का उद्धार', 'प्रेम राज्य' आदि खण्डों में पौराणिक एवं ऐतिहासिक आख्यानों का चित्रण किया गया है, जो कि मिथकीय रूप में वर्तमान साहित्य में प्रयुक्त हो रहे हैं। 'प्रेम-पथिक' कविता में मनुष्य की स्वार्थपरक संकीर्ण मनोवृत्ति का उल्लेख हुआ है।

'जिसे समझते हो तुम अपना मित्र भूलकर, वही अभी
जब तुम हट जाते हो, तुमको पूरा मूर्ख बनाता है।
क्षण भर में ही बने मित्रवर अन्तरंग या सखा समान
'प्रिय' हो 'प्रियवर' हो सब तुम हो काम पड़े पर 'परिचित हो,
कहीं तुम्हारा 'स्वार्थ' लगा है, कहीं 'लोभ' है मित्र बना,
कहीं 'प्रतिष्ठा' कहीं 'रूप' है, मित्र रूप में रंगा हुआ।'

किसी भी राष्ट्र की पहचान वहां के निवासियों के आचार-विचारों से बनती हैं। प्लेटो, अरस्तु, सुकरात आदि पाश्चात्य विचारकों ने अपनी उदात्त विचारधारा से ही अपने राष्ट्र का गौरव बढ़ाया। विश्व में वैचारिक धरातल पर हमारी खास पहचान बनी है। प्रसाद ने भारतीय दार्शनिक संस्कृति के लक्षण भी बताए हैं और सौंदर्य-बोध-संबंधी रुचि-भेद के भी। काव्य में इस रुचि के प्रतिफलन की व्याख्या करते हुए उन्होंने साहित्य की विवेचना में इस 'भारतीय रुचि-भेद को लक्ष्य में रखने की वकालत की। उनका सारा बल कलाओं के प्रसंग में रुचि और सौंदर्य-बोध की 'भारतीयता' पर था। प्रसाद के सामने यह सवाल जातीय अस्मिता की पहचान और प्रतिष्ठा का सवाल था।'

'करुणालय' दृश्य काव्य गीति-नाट्य के ढंग पर लिखा गया पौराणिक लघु आख्यान है। जिसके अंत में समवेत स्वर की पंक्तियों में सर्वमंगल की कामना की गई है। वस्तुतः यही हमारी भारतीयता का प्राण मंत्र है।

'जय जय विश्व के आधार।
अगम महिमा सिंधु-सी है कौन पावै पार।
जो प्रसव करता जगत को, तेज का आकार।
उसी के शुभ-ज्योति से हो सत्य पथ निर्धार।
छुटे सब यह विश्व-बन्धन हो प्रसन्न उदार।

विश्व प्राणी प्राण में हो व्याप्त विगत विकार।
–जय जय विश्व के आधार॥'

प्रसाद ने 'महाराण प्रताप' के माध्यम से एक ऐसा जातीय चरित्र प्रस्तुत किया है, जो कि परतंत्र राष्ट्र की मुक्ति का स्वप्न देखता है–

'कहो कौन है? आर्य्यजाति के तेज-सा?
देशभक्त, जननी का सच्चा पुत्र है,
भारतवासी! नाम बताना पड़ेगा,
मसि मुख में ले अहो लेखनी क्या लिखे।
उस पवित्र प्रातः स्मरणीय सुनाम को।
नहीं, नहीं होगी पवित्र यह लेखनी।
लिखकर स्वर्णाक्षर में नाम 'प्रताप' का।'

'कानन-कुसुम' में ईश्वर एवं प्रकृति संबंधी कई रचनाएं हैं, पर मातृभूति-वंदना और युवजन उद्‌बोधन का स्वर भी प्रमुख है। 'भरत', 'बीरबालक', 'कुरुक्षेत्र', और 'गान' कविता हमारी भारतीय चेतना से अनुप्राणित है।

'जननी जिसकी जन्मभूमि हो; वसुन्धरा ही काशी हो।
विश्व स्वदेश, भ्रातृ मानव हो, पिता परम अविनाशी हो।
दम्भ न छुए चरण-रेणु वह धर्म नित्य-यौवनशाली।
सदा सशक्त करो से जिसकी करता रहता रखवाली॥'

डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार– 'देश-प्रेम, देश भक्ति अथवा देशवत्सलता सहज मानवीय वृत्ति है तो राष्ट्रीयता को इस तुलना में उत्तेजित मनःस्थिति कहा जायेगा। राष्ट्रीयता की अनुभूति पराधीन देश में प्रयत्नपूर्वक जगाई जाती है, और यह प्रयत्न अथवा सजगता का तत्त्वं आधुनिक भाव-बोध की आरंभिक पहिचान कही जा सकती है।'

'झरना' और 'आँसू' में कवि की वैयक्तिक प्रेमानुभूतियां प्रकट हुई हैं। 'लहर' में प्रकृति, आध्यात्म और राष्ट्रीयता का अद्‌भूत समन्वय हुआ है। प्रसिद्ध गीत 'बीती विभावरी जाग री' की पृष्ठभूमि में सम्पूर्ण भारतीय चेतना को जगाने की बात की गई है। अन्य कविताएं शीर्षक के अंतर्गत 'अशोक की चिंता', 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण', 'पेशोला की प्रतिध्वनि' और 'प्रलय की छाया' में राष्ट्रप्रेम को अतीत और वर्तमान से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

'जन्मभूमि दलित विकल अपमान से
त्रस्त हो कराहती थी
कैसे फिर रुकती?'
x x x
'आज विजयी हो तुम
और हैं पराजित हम
तुम तो कहोगे, इतिहास भी कहेगा यही,
किंतु यह विजय प्रशंसा भरी मन की–
एक छलना है।
वीरभूमि पंचनद वीरता से रिक्त नहीं।

काठ के हों गोले जहां
आटा बारूद हो।'

प्रसाद की 'कामायनी' में आध्यात्मिकता, भौतिकता और मानवीय वृत्तियों का विलक्षण समन्वय हुआ है। सम्पूर्ण कृति में भारतीयता की महक सर्वत्र विद्यमान है। छायावादी सौंदर्य चेतना की अनुपम कृति के साथ-साथ आधुनिक युग की दार्शनिक, सांस्कृतिक और सामाजिक-चेतना का एक प्रामाणिक महाकाव्य है। श्रद्धा भारतीय कृषि व्यवस्था, आदर्शनारी और मांधीवादी विचारधारा की संवाहिका है। आज जिस नारी विमर्श की चर्चा साहित्य जगत में हो रही है। प्रसाद उसके अधिकारों की वकालत पहले ही कर चुके हैं–

'तुम भूल गए पुरुषतव मोह में
कुछ सत्ता है नारी की
समरसता है संबंध बनी
अधिकार और अधिकारी की'

अधिकार एवं समर्पण की इस अद्वितीय क्षमता के बल पर ही नारी सृष्टि की रचना एवं विकास में पुरुष से कहीं आगे निकल जाती है। त्याग जीवन के सभी क्षेत्रों में समरसता एवं आनंद का भाव पैदा करता है। हमारी भारतीय संस्कृति त्याग एवं पश्चिम की संस्कृति भोग की रही है। सांस्कृतिक संक्रमण के इस दौर में भारतीयता की छवि धूमिल हुई है।

'इस अर्पण में कुछ और नहीं,
केवल उत्सर्ग झलकता है
मैं दे दूं और न फिर कुछ लूं
इतना ही सरल झलकता है।'

'अपने विकास-क्रम में मनुष्य की संस्कृति आज जहां पहुंची है, प्रसाद के अनुसार, उसकी समस्याएं हैं अतिभौतिकता, अतिबौद्धिकता और अतियांत्रिकता। इड़ा के साथ मिल कर मनु ने 'विज्ञान सहज साधन उपाय' स्वीकार करते हुए सारस्वत प्रदेश की जो उद्योग प्रधान सभ्यता बनाई है वहां का जीवन-क्रम इन्हें जन्म देता है। इन समस्याओं से उत्पन्न संघर्ष को शमित करने के लिए कवि ने समरसता की भाव-भूमि संकेतित की है। भारतीय और पाश्चात्य विचारधाराओं की टकराहट और उनके सामंजस्य की प्रणाली प्रसाद ने रचना के कई क्षेत्रों में अपनाई है, जो एक प्रकार से 19वीं शती के पुनर्जागरण की एक मुख्य आधार भूमि कही जा सकती है। पूर्व और पश्चिम का ऐसा ही द्वंद्वात्मक संबंध कवि ने अपने रचना-दर्शन में विकसित किया है।'

डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी के उक्त विचारों में 'कामायनी' की मूल चेतना अभिव्यक्त हुई है। प्रसाद ने जहां **'अरुण यह मधुमय देश हमारा'** और **'हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती'** गीतों से स्वतंत्रता आन्दोलन को गति प्रदान की है, वहीं पर कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक-जीवन की अद्‌भुत झांकी प्रस्तुत की है।

जयशंकर के व्यक्तिगत जीवन की गरिमा, अध्ययन, चिंतन एवं उदात्त विचारों की सफल अभिव्यक्ति उनके समग्र साहित्य में हुई है, जिसमें भारतीयता के खग का स्वर कुल-कुल और सरिता के कल-कल की ध्वनि सर्वत्र विद्यमान है।

□□